

---

# Shri Bala Muktavali Stotram

---

## श्रीबालामुक्तावलीस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Bala Muktavali Stotram

File name : bAlAmuktAvalIstotram.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, devI

Location : doc\_devii

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : bAlAsaparyA saparyAkrama-nAmAvalI-stotrAdisaNgrahaH

Latest update : March 31, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 31, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीबालामुक्तावलीस्तोत्रम्



बालार्ककोटिरुचिरां कोटिब्रह्माण्डभूषिताम् ।  
कन्दर्पकोटिलावण्यां बालां वन्दे शिवप्रियाम् ॥ १ ॥  
वह्निकोटिप्रभां सूक्ष्मां कोटिकोटिसहेलिनीम् ।  
वरदां रक्तवर्णां च बालां वन्दे सनातनीम् ॥ २ ॥  
ज्ञानरत्नाकरां भीमां परब्रह्मावतारिणीम् ।  
पञ्चप्रेतासनगतां बालां वन्दे गुहाशयाम् ॥ ३ ॥  
पराप्रासादमूर्ध्निस्थां पवित्रां पात्रधारिणीम् ।  
पशुपाशच्छिदां तीक्ष्णां बालां वन्दे शिवासनाम् ॥ ४ ॥  
गिरिजां गिरिमध्यस्थां गीः रूपां ज्ञानदायिनीम् ।  
गुह्यतत्त्वपरां चाद्यां बालां वन्दे पुरातनिम् ॥ ५ ॥  
बौद्धकोटिसुसौन्दर्यां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ।  
आशावासां परां देवीं वन्दे बालां कपर्दिनीम् ॥ ६ ॥  
सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीं त्रिगुणात्मकरूपिणीम् ।  
कालग्रसनसामर्थ्यां बालां वन्दे फलप्रदाम् ॥ ७ ॥  
यज्ञनाशीं यज्ञदेहां यज्ञकर्मशुभप्रदाम् ।  
जीवात्मविश्वजननीं बालां वन्दे परात्पराम् ॥ ८ ॥  
इत्येतत्परमं गुह्यं नाम्ना मुक्तावलीस्तवम् ।  
ये पठन्ति महेशानि फलं वक्तुं न शक्यते ॥ ९ ॥  
गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं महागुह्यं वरानने ।  
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ॥ १० ॥  
कन्यार्थी लभते कन्यां मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ।  
बहुनात्र किमुक्तेन चिन्तामणिरिवापरम् ॥ ११ ॥


गोपनीयं प्रयत्नेन गोपनीयं न संशयः ।  
अन्येभ्यो नैव दातव्यं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ १२ ॥  
इति श्रीविष्णुयामले श्रीबालामुक्तावलीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Shri Bala Muktavali Stotram*

pdf was typeset on March 31, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

